लोक साहित्य का स्वरूप

लोक + साहित्य = लोक साहित्य = FOLKLORE
FOLKLIT.

लोकृदर्शने + घञ् = लोक = देखना

लड्लकार, एक वचन अन्य पुरुष रूप = लोकते = देखने वाला

शब्दकोश - स्थान विशेष जिसका बोध प्राणी को हो, संसार, प्रदेश, लोग, समाज प्रा

वंश

लोक = FOLK > FOLC > VOLK = असंस्कृत, अशिक्षित
(ANGLOSECTION) (JERMAN)

जन, ग्राम = राम नरेश त्रिपाठी

FOLKLORE (W.J THOMSON 1846)

The word was coined by W.J Thomsan in 1846 to denote to the traditio

customs and superstitions of the uncultured classes in civilized Natio

LORE < LAR = ज्ञान

लोक वार्ता	लोक संस्कृति	लोकयान
कृष्णानंद गुप्त	कृष्ण देव उपाध्याय	सुनीति कुमार चटर्जी
वासुदेव शरण अग्रवाल	भोलानाथ तिवारी	
सत्येन्द्र	हजारी प्रसाद द्विवेदी	

लोक तत्त्व

भाषा वर्ग	छन्द वर्ग	प्रतिपादक वर्ग	प्रतिपाद्य वर्ग
लोक भाषा या जनपदीय भाषा	शास्त्रों द्वारा अस्वीकार छंद	ऐसे उपमान जो क्षेत्रीय हो	कथावस्तु में लोककथ पुराण का कथानक
लोक प्रचलित मुहावरे	वे गीत या छन्द जो अत्यधिक लोक प्रचलन के कारण उच्च साहित्य में अस्वीकार हो गए	लोक प्रचलित कथांश	उस कथानक के मानक रूप (Tale Typ
ठेठ ग्राम्य या जनपदीय शब्द	वे छन्द जिनके निर्माण का आधार अशास्त्रीय पद्धति है।	विविध रीति रिवाज, लोक विश्वास, देवी-देवता अनुष्ठान	अभिशाप (MOTIF)
लोकोक्तियां	तुकें या टेंके	धर्म गाथा विषयक प्रसंग प्रतिपाद्य वर्ग	
लोक ज्ञान विषयक ठेठ किन्तु पारिभाषिक शब्दावली	वे गीत, जो लोकाचार से जुड़े हैं		
विविध ज्ञान विज्ञान के लिए पारिभाषिक शब्दों की लोकतान्त्रिक परिणति			

लोक साहित्य की विशेषताएं

- यह अनपढ़, असभ्य लोगों का साहित्य है।
- यह विशेषतः जीवन से सम्बन्धित है।
- यह जंगलों में निवास करने वाली जनजातियों से सम्बद्ध है।
- यह मौखिक परम्परा में गतिमान है।
- इसमें मानव जीवन की उन्मुक्त झाकियाँ हैं।
- इसके युग-युग से संचित मानव की परम्परा, विश्वास एवं संस्कार सन्निहित हैं।
- यह मानवीय विकास की सच्ची झांकी है।
- शिष्ट साहित्य का मूल हैं
- लोक साहित्य लोक व्यवस्था का परिचायक है।
- यह मानव की आत्माभिव्यक्ति है।

लोक वार्ता तथा लोक साहित्य मानव के विकास में युग-युग से संचित, उन्मु
सहज हृदयोद्‌गारों, आत्म संस्कारों एवं सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था की अकृ
सच्ची झांकी है। चिरकाल से अधिकांशतः मौखिक रूप में प्रवाहित होता है हो
है।

सीस जटा उर बाहु विसाल बिलोचन लाल तिरीछी सी भौहें।
तून सरासन बान धरे तुलसी बन मारग मा सुद्धि सोहैं।
सादर बारहिबार सुभाय चितै तुम त्यौं हमरौ मनु मोहैं।
बूझति ग्राम बधू सिय सो कहौ साँवरे से सखि रावरे को हैं।
सुनि सुन्दर बैन सुधारस सामे सयानी है जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दै सैन तिन्है समुझाय कछू मुसुकाय चली।

लोटत नीच पराग पंक में पंचतन आपु सम्हारे।
बारंबार सरक मदिरा की अपरस कहा उघारे।

धन्यवाद

प्रस्तुति
प्रो० पवन अग्रवाल
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ